DR Krishnadeo kumar bharti
Assistant professor (G.T)
Dept of Political science
C.M.j College Donwarihat
Khutauna, Madhubani
Email-Kdkbharti08@gmail.com
B.A Part-1.Paper-2.Date12-08-2020

गोपालकृष्ण गोखले के राजनितिक विचारों का मूल्यांकन----

गोपालकृष्ण गोखले एक उच्चकोटि के उदारवादी विचारधारा के व्यक्ति थे।गोखले को महात्मा गाँधी ने अपना गुरु माना है।महात्मा गाँधी ने 'भगिनी समाज'पत्रिका में लिखा था--"श्री कृष्ण ने जो उपदेश अर्जुन को दिया था वही उपदेश भारतमाता ने महात्मा गोखले को दिया और उनके आचरणों से सूचित होता है कि उन्होंने उसका पालन भी किया।यह सर्वमान्य बात है कि उन्होंने जो जो किया, जिस जिस का उपभोग किया, जो स्वार्थ त्याग किया, जिस तप का आचरण किया वह भी सब उन्होंने भारतमाता के चरणों में अर्पण कर दिया।"

गोपालकृष्ण गोखले का राजनीतिक-----
गोखले उदारवादी विचारधारा के व्यक्ति थे।दादाभाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता तथा रानाडे आदि उदारवादी नेताओं के विचारों से साम्यता रखते हुए गोखले ने उदारवादी पद्धतियों का समर्थन किया।वे अंग्रेजी की न्यायप्रियता, निष्पक्षता तथा सहदयता में पूर्ण आस्था रखते थे।अंग्रेजों के प्रति उनकी राजभक्ति के निम्न तीन प्रमुख कारण थे--प्रथम, वे ब्रिटिश शासन को दैवी विधान मानते थे तथा द्वितीय, ब्रिटिश शासन जैसी शासन व्यवस्था का कोई विकल्प उन्हें नजर नहीं आता था। अंग्रेजों के प्रति राजभक्ति के विषय में उन्होंने कहा था,"अच्छे या बुरे के लिए हमारा भविष्य और हमारी आकांक्षाएँ इंग्लैण्ड के साथ जुड़ गई है तथा कांग्रेस स्वतंत्र रूप से यह स्वीकार करती है कि हम जो प्रगति चाहते हैं, वह ब्रिटिश शासन की सीमाओं में है।"

अतः स्पष्ट है कि गोखले एक राष्ट्रवादी नेता तो थे, परन्तु वे उदारवादी नेता भी थे तथा 'उग्रवाद'की बौद्धिक उन्माद कहकर आलोचना किया करते थे।

2. राष्ट्रीय एकता तथा हिन्दू मुस्लिम एकता के समर्थक ----उन्होंने देश की सभी जातियों, धर्मों और सम्प्रदायों के लोगों के मध्य एकता तथा सौहार्दपूर्ण संबंधों को आवश्यक माना।उनका विश्वास था कि इनके अभाव में भारत सुदृढ़ और विकसित नहीं हो सकता।

हिन्दुओं और मुसलमानों के मध्य अधिकाधिक सहयोग बढ़ाने हेतु उन्होंने इलाहाबाद लखनऊ, आगरा, तथा अमृतसर आदि नगरों का भ्रमण करके अनेक साम्प्रदायिक भावनाओं के विरुद्ध भाषण दिया।इन दौरों पर मुस्लिम समुदाय ने उनका अत्यधिक सत्कार किया। उन्होंने लोगों में इस विश्वास दिलाया कि इन्सान पहले भारतीय है तथा बाद में हिन्दू या मुसलमान।

*3.*संवैधानिक साधनों में आस्था----गोखले अपनी माँगों को संवैधानिक साधनों के तहत ही रखने में विश्वास करते थे। गोखले के युग में हिंसक घटनाओं तथा उग्रवादी कार्यों के लिए स्थान नहीं था।गोखले ने राजनीतिक जीवन में संवैधानिक साधनों को मान्यता प्रदान करने वाली विचारधारा का पोषण किया।इसी कारण उन्होंने बंगाल विभाजन के समय स्वदेशी आंदोलन का खुलकर समर्थन किया।परन्तु उनके इस विरोध में भी घृणा के स्थान पर सदभाव तथा प्रेम विद्यामान था।

*4.*गोखले की स्वदेशी भावना----स्वदेशी भावना के विषय में बोलते हुए उन्होंने कहा कि,"स्वदेशी अथवा राष्ट्र से प्रेम का दृष्टिकोण मानवता के हदय में उत्पन्न एक सुन्दरतम विचार है।यह भावना इतनी प्रभावोत्पादक है कि इसकी कल्पना से विचारों में कम्पन तथा वास्तविक अनुमति से मनुष्य परम आनन्द की स्थिति में पहुँच जाता है।इस विचार का यह प्रभाव होता है कि प्रत्येक व्यक्ति देश की सेवा में संलग्न हो जाता है।

गोखले एक सच्चे राष्ट्रवादी ,उदारवादी, देशभक्त थे।उन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। महात्मा गाँधी उन्हें अपना राजनीतिक गुरु मानते थे तथा कहते थे कि'गोखले मेरे राजनीतिक गुरु हैं।'

लार्ड कर्जन ने उसके विषय में कहा था--यद्यपि मुझे अपनी विधान परिषद में बहुधा गोखले हाथों भारी आधात सहने पड़े थे, तथापि मुझे किसी भी राष्ट्रीयता का कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं मिला, जिसकी संसदीय योग्यता गोखले से अधिक हो।ईश्वर ने उन्हें असाधारण योग्यताओं से विभूषित किया था जिनका प्रयोग उन्होंने देश के हितार्थ किया।

आगे, धन्यवाद।

2020-08-12
From vivo Notes

Scanned with CamScanner